# <u>गृहस्थ जीवन = बेहद की जेल</u>

जेल अर्थात बंधन। गृहस्थ जीवन भी अनेक बंधनो वाला जीवन है।

1. शारीरिक बंधन- शारीरिक शक्ति कम होती है। उनके लिए ही कहा है – भोगे न भूकता, वयमेव भूकता। जो कुमार- कुमारी है उनमे शारीरिक शक्ति ज्यादा होती है। भोगी रोगी जल्दी बनता है।
2. सामाजिक बंधन – समाज के फंक्शन, पारिवारिक फंक्शन और प्रसंगो मे उनको उपस्थिती देनी ही पड़ती है। हम अगर किसी बीमार को देखने या फिर कोई प्रसंग मे जाते है तो सेवा के हिसाब से मौज मे जाते है, बंधन से नही।
3. आर्थिक बंधन – परिवार और बच्चो की पालना, पढ़ाई, मौज-शोक, बीमारी आदि के लिए उनको धन ज्यादा कमाना पड़ता है। कुमार कुमारी के लिए तो दाल रोटी खाओ प्रभु के गुण गाओ।
4. संबंधो का बंधन- संबंध निभाने पड़ते है। जब पत्नी कि मृत्यु हुई तब कृष्ण भक्त नरसिंह मेहता ने कहा है – "भलु थयु भांगी जंजाल, सुखे थी भजशु हरि नुं नाम" ( गुजराती वाक्य है जिसका अर्थ है अच्छा हुआ जंजाल तूटी, अब और ही अच्छे से हरि का नाम ले सकेंगे )।
5. निर्णयो का बंधन – independent decision नही ले सकते, collective decision होते है। independent choice नही होती, collective choice होती है। compromise करना पड़ता है।
6. मानसिक बंधन- गृहस्थी में मोह की रग थोड़ी तो जाती ही है। योग में मन-बुद्धि देहधारीयों की तरफ जाने की संभावना ज्यादा है।
7. आध्यात्मिक उन्नति में बंधन- आध्यात्मिकता के शिखर पर पहुँचने में ज्यादा मेहनत करनी पड़ती है। परिस्थितियाँ प्रतिकूल होती है।
8. समय का बंधन- स्वयं के लिए समय कम मिलता है। दूसरों के या परिवार जनों के लिए भी समय देना पड़ता है।

Other similarities:-

9. जेल अर्थात सजा। जगदीश भाई के एक क्लास में है- " उस जेल में तो कैदी का रेकॉर्ड अच्छा होता है, तो सजा कम हो जाती है। लेकिन गृहस्थी बनना तो आजीवन कारावास की सजा है, इसमें तो सजा कम भी नही हो सकती "।
10. जैसे उस जेल में किए हुए कर्मो की सजा मिलती वैसे कलियुग में संबंध भी हिसाब किताब के लिए ही होते है, इसमे सुख तो है ही नही। कर्म संबंध नही है, कर्म बंधन है।
    जगदीशभाई के एक क्लास में है एक बच्चा पैदा हुआ तब से उनके माँ-बाप के जीवन में एक के बाद एक मुसीबतें आने लगी तो उस बच्चे का नाम रख दिया- 'मुसीबतहुसेन'। आज कल के बच्चे भी माँ-बाप के विकर्म विनाश कराने के निमित्त बन जाते है।
11. जैसे कोई कैदी तंग हो जाने पर भाग जाने का प्रबंध करता है, वैसे कई गृहस्थी भी देवाला हो जाने पर या कोई घटना से तंग होकर घरबार छोड़ सन्यासी बनने का प्रबंध करता है।
12. कई बार जैलर या जेल ऑफिसर कैदी को परेशान करते है। वैसे बच्चे भी गृहस्थी को परेशान करते है। हमने कई बार देखा है, बच्चा क्लास के समय या योग में उनके पिताजी की गोद में बैठ जाता है, कान पकड़ रहा है, बाल खींच रहा है, आंखो में उंगली डाल रहा है।

13. उस जेल में सीमा होती है। वैसे गृहस्थी की भी एक बाउंडरी होती है। वो जब चाहे तब मधुबन जाये, जब चाहे तब सेवा में जाये, जब चाहे तब योगाभ्यास करे या एकांत में मनन चिंतन करे ये संभव नही होता। कुमार-कुमारी तो कभी भी डायरेकसन मिले तो एवररेडी हो सकते है। वो पिंजरे के पंछी का जीवन है, वो मुक्त गगन में उड़ने वाले पंछी का जीवन है।
14. जेल में कैदी से फिजिकल काम लिया जाता है, वैसे गृहस्थी को भी लगेज उठाना, बच्चो को तैयार करना, स्कूल छोड़ने जाना, मार्केट में सब्जी लेने जाना ऐसे कई सारे काम होते है।
15. जैसे जेल में सीसीटीवी केमेरा होते है, वैसे गृहस्थी में भी पति पत्नी पर, पत्नी पति पर, माँ-बाप बच्चों पर निगरानी रखते है।
16. जैसे संस्कारो के वश या आवेश में आकार व्यक्ति गलती कर देता है, बाद में जेल में पश्चाताप होता है, वैसे यहाँ भी शादी के बाद जीवन भर पश्चाताप करता है।
17. जैसे किसी कैदी को liberal jail होती, किसिकों strict, नम्बरवार गलती अनुसार। वैसे गृहस्थ में भी वैरायटी जेल होती। अगर wrong number लग जाये तो काले पानी की सजा।
    जैसे अंग्रेज़ो के समय में काले पानी की सजा भयानक मानी जाती थी, जो आंदामान निकोबार टापू पर स्थित जेल में दी जाती थी और special case में दी जाती थी।
18. जेल में संबंधी से मिलने या कोई विशेष कार्यो में जैलर की परमिशन लेनी पड़ती है, वैसे गृहस्थी को भी बाबा मिलन में या और विशेष कार्यो में घर वालों की छुट्टी लेनी पड़ती है।
19. जैसे जेल में सुख सुविधाओ में compromise करना पड़ता है, वैसे गृहस्थी को भी अपने ambitions वा करीयर में compromise करना पड़ता है।
20. जैसे एक कैदी की मनोदशा दु:खी, उदास, निराश होती है वैसे गृहस्थी में भी उमंग उत्साह की कमी और मन में बोज होता है।
21. जैसे एक तोते की कहानी सुनाई थी (स्वतन्त्रता, स्वतन्त्रता, स्वतन्त्रता.....), वैसे एक कैदियो की भी कहानी सुनाई थी की अनेक वर्षो की जेल के बाद उनको कोई निकालता है, लेकिन वो अब जेल में ही comfort फील करते है। बहार निकलकर कहाँ जाये, क्या करे, फियर ऑफ अननोन। गृहस्थी के बंधन से भी छुड़ाने बाबा युक्तियाँ बताते है जैसे ट्रस्टी बनो, निमित्त समजकर संभालो लेकिन गृहस्थी में ही comfort फील करते है। बाब कहेते है छोडो तो छूटो लेकिन जो छुड़ाने वाला है उसी को दुश्मन समजते है।
    जैसे बाबा जेल बर्ड की बात बताते है, वैसे कई एक शादी से संतुष्ट नही होते तो बार बार जेल में जाते है।